परिवार के सदस्यों के उदर पोषण का भार उनके कंधे पर ही तो था। 'वात्सल्य' के उस स्नेह की कमी बालक को सालों-साल कचोटती रही किंतु वही बालक आज बारह हजार आदिवासी बच्चों पर अपना 'पितृवत स्नेह' बरसाते हुए उन्हें नि:शुल्क वस्त्र, भोजन, औषधि, आवास के साथ-साथ के.जी से लेकर पी.जी तक की आधुनिकतम शिक्षा उपलब्ध करा रहा है।

वह बालक आज के 'यथार्थ विदेह' डॉक्टर अच्युत सामंत हैं, विश्व विख्यात 'कीट-कीस' के संस्थापक। डॉ अच्युत सामंत जिनके कुशल प्रबंधन तथा निर्देशन में उनके द्वारा स्थापित शिक्षण संस्था 'कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (कीस)' आज विश्व की सबसे बड़ी आदिवासी आवासीय शिक्षण संस्थान के रूप में न सिर्फ पूरे भारत में विख्यात हो चुकी है, बल्कि 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स' तक में उसका नाम दर्ज हो चुका है। यह उनका व्यक्तित्व ही है, जिसका परिचय पा कर स्वर्गीय मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह जैसे देश के दिग्गज राजनीतिज्ञ ने कहा था कि 'डॉ अच्युत सामंत वर्तमान दौर के पंडित मदन मोहन मालवीय हैं।' 'कीस' को आज देशवासी आधुनिक शांतिनिकेतन के रूप में स्वीकारने लगे हैं। छोटे कद वाले डॉ अच्युत सामंत का व्यक्तित्व आज इतना विराट हो चुका है कि उनका शुमार विश्व के सबसे सफलतम शिक्षाविदों में हो रहा है।

शिक्षण कार्य को समर्पित

बचपन में घोर अभाव के बीच जूझते हुए भी शिक्षा हासिल करने की ललक उनमें जाग उठी थी। खुद रसायन विज्ञान के क्षेत्र में एम.एस.सी. तक की शिक्षा ग्रहण की तथा अपने भाई-बहनों को भी उच्चतम शिक्षा हासिल करने के लिए प्रेरित किया। डिग्री हासिल करने के उपरांत शिक्षादान के विचार ने उन्हें शिक्षण संस्थान शुरू करने के लिए प्रेरित किया। महज पांच हजार रुपये की पूंजी से अपना आई.टी.आई. कालेज आरंभ किया। कहा जाता है कि अगर आप नेक इरादे से कोई कार्य आरंभ करते हैं तो ईश्वर आपके लिए कामयाबी की राह स्वयं खोलते चलते हैं। इसे एक चमत्कार नहीं तो आप क्या कहेंगे कि घोर दरिद्रता की पृष्ठभूमि से उभरा एक बालक आज जहां बारह हजार आदिवासी बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध करा रहा है, वहीं उसके द्वारा स्थापित 'कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इन्डस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (कीट) यूनिवर्सिटी' के विभिन्न विभागों में १७००० छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यह डॉ सामंत की निष्ठा है कि आज कीट विश्वविद्यालय तथा कीस विद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्र, कीट विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस को ही डॉ अच्युत सामंत की जन्मतिथि मानकर उसका पालन करते हैं।

अनुपम व्यक्तित्व

अलाभकारी स्वयंसेवी पंजीकृत संस्था 'कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी', जिसके तहत कीट डीम्ड यूनिवर्सिटी का संचालन होता है, के संस्थापक डॉ अच्युत सामंत ने जहां कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज की भी स्थापना की है, वहीं वे नेशनल क्वायर बोर्ड (दिल्ली), एआईसीटीई (नयी दिल्ली) की कार्यकारिणी समिति, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (नयी दिल्ली), कपार्ट (भारत सरकार-नयी दिल्ली) की जनरल बाडी,

विशिष्ट साहित्यकार महाश्वेता देवी के साथ डॉ. अच्युत सामंत

कपार्ट (भारत सरकार) की क्षेत्रीय कमेटी के सदस्य, भारत स्काउट एंड गाइड्स (ओडिशा) के उपाध्यक्ष के तौर पर अपनी सक्रिय सेवाएं दे रहे हैं। इन्होंने ओडिशा के सुदूर अंदरूनी जंगली इलाकों में अन्न बटोर कर किसी प्रकार जीवन व्यतीत करने वाले आदिवासी समाज की 'जुआंगा' जनजाति के लोगों को शिक्षित कर उन्हें खेती करने की शिक्षा दी। अपने गांव कलरबंका को गोद लिया तथा गांव में शहरों की तमाम सुविधाएं उपलब्ध करा उसे भारत का ऐसा पहला गांव बनाया, जिसके हर व्यक्ति के स्वास्थ्य का बीमा किया गया है। 'कीस' के माध्यम से बारह हजार बच्चों के नि:शुल्क लालन-पालन से लेकर, शिक्षा देने के महती कार्य के अतिरिक्त डॉ सामंत डेढ़ हजार अनाथ बच्चों के लिए एक केयर होम (अनाथालय) के निर्माण कार्य को संपन्न करा रहे हैं। यह डॉ सामंत का अधव्यवसाय है कि 'कीट' व 'कीस' में चार हजार व्यक्ति परोक्ष रूप से जुड़कर, पांच हजार व्यक्ति कांट्रेक्ट के तहत तथा पच्चीस हजार व्यक्ति अपरोक्ष रूप से जुड़कर अपनी आजीविका अर्जित कर रहे हैं। उनकी प्रतिभा को स्वीकार करते हुए स्कॉल फाउंडेशन की ओर से संचालित 'सोशल एज' ने इन्हें सन् २००७ में विश्व के १५ सर्वोत्तम सामाजिक उद्यमी में शामिल किया था। डॉ अच्युत सामंत ने ओडिशा की ओडिया भाषा में प्रकाशित होने वाली सबसे लोकप्रिय पारिवारिक पत्रिका 'कादंबिनी' की भी शुरुआत की थी। विभिन्न कलाओं को बढ़ावा देने वाले डॉ सामंत ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त फिल्म 'कथांतर' का निर्माण भी किया है।

अपने विचारों और आचरण में धार्मिक वृत्ति वाले डॉ अच्युत सामंत हर महीने के पहले दिन जहां श्रीक्षेत्र पुरी धाम में श्री जगन्नाथ भगवान, देवी सुभद्रा तथा श्री बलभद्र से आशीष ग्रहण करने जाते हैं, वहीं उनके नित्यप्रति के दर्शन के लिए 'कीस' के परिसर में ही लगभग तीन करोड़ रुपये की लागत से भव्य मंदिर का निर्माण कर वहां श्री जिउओं की नित्य पूजा भी करते हैं। प्रतिदिन कीस परिसर में सुबह तथा शाम उनके दर्शन इनकी दिनचर्या में शामिल है। इसके अतिरिक्त पूरे ओडिशा के लगभग पचास से अधिक मंदिरों का जीर्णोद्धार इन्होंने कराया है। श्री हनुमान के परम भक्त डॉ सामंत ने अपने आराध्य के अनुरूप ही मानव सेवा तथा शिक्षा के प्रसार के निमित्त आजीवन अविवाहित रहने के लिए 'ब्रह्मचर्य' का व्रत धारण किया है। सनातन धर्म में अपनी अटूट आस्था के बावजूद 'सर्वधर्म-समभाव' के हिमायती डॉ सामंत जहां अपने 'कीट' व 'कीस' परिसर में श्री जगन्नाथ की भव्य रथयात्रा का आयोजन करते हैं, वहीं वे मकर संक्रान्ति, ईद-उल जोहा, ईद-उल फितर, क्रिसमस तथा अन्य धर्मों के त्योहारों का भी पालन समभाव से करते हैं।

कृतित्व

डॉ सामंत के कुशल निर्देशन में सन् १९९२ में मात्र पांच हजार रुपये के निवेश से स्थापित आईटीआई शिक्षण संस्थान 'कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी, जो एक किराये के परिसर में शुरू हुई थी, आज उसने वृहद आकार ग्रहण कर लिया है तथा आज १७० करोड़ रुपये बैंक ऋण के अतिरिक्त 'कीट' व 'कीस' के पास लगभग १००० करोड़ की संपदा है। आज 'कीट' देश की ऐसी अकेली शिक्षण संस्था है, जहां आईटीआई से लेकर पी.एच.डी तक की शिक्षा दी जाती है। आईटीआई के रूप में अपनी स्थापना के छह वर्षों के भीतर ही एक डीम्ड यूनिवर्सिटी के रूप में 'कीट' के विकास की गाथा जहां रिकार्ड के तौर पर दर्ज है, वहीं सब से युवा कुलाधिपति के रूप में डॉ अच्युत सामंत का नाम 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स' में दर्ज है। 'कीट' में सन् १९९७ में बी.टेक की पढ़ाई आरंभ हुई थी, तथा इसे सन् २००४ में डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा हासिल हुआ था। चार सौ एकड़ के क्षेत्रफल में फैले इसके विशाल परिसर में ४३,००० वर्गफीट में निर्मित भव्य भवनों में आधुनिकतम सुविधाजनक आवासीय सुविधा के साथ वातानुकूलित एवं वाईफाई की सुविधा वाली कक्षाएं एवं प्रयोगशालाएं संचालित होती हैं। आधुनिकतम इन्डोर खेलों की सुविधा वाले स्टेडियम तथा जिम्नाजियम की सुविधा वाली कीट यूनिवर्सिटी में बीस से अधिक विदेशी राष्ट्रों के छात्र भी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहां के शिक्षण स्तर से प्रभावित होकर 'आउटलुक' ने अपने सर्वेक्षण में इसे देश के १८ सर्वोत्तम टेक्नीकल इंस्टीट्यूट में शामिल किया था जबकि प्लेसमेंट के क्षेत्र में इसका देशभर में छठा स्थान था। आज कीट यूनिर्वसिटी के तहत स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी, स्कूल ऑफ ला, स्कूल ऑफ मेडिकल एजूकेशन, स्कूल ऑफ डेन्टल साइंसेज का संचालन किया जा रहा है, जिनमें हजारों छात्र आधुनिकतम सुविधाओं के साथ विश्वस्तरीय शिक्षा हासिल कर रहे हैं।

'कीस' ने अपनी अद्भुत सेवा भावना के कारण वृहत्तम आदिवासी आवासीय विद्यालय के रूप में जहां 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स' मे नाम दर्ज कराया है, वहीं यह नाम आज ओडिशा के उन हजार-हजार आदिवासी परिवारों में

उपराष्ट्रपति मोहम्मद हामिद अंसारी के साथ डॉ. अच्युत सामंत

भगवान के आशीष के तौर पर लिया जा रहा है, जिनके बालक-बालिकाएं यहां शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। सन् १९९३ में २२५ बच्चों को लेकर शुरू की गयी इस शिक्षण संस्था में आज १२,००० बच्चे समस्त नि:शुल्क सुविधाओं के साथ शिक्षा हासिल कर रहे हैं। ओडिशा के ५५ विभिन्न आदिवासी समुदाय के १३ आदिम जनजातियों (बोंडा, जुआंगा, कांधा, मुंडा तथा लोध) के बच्चे यहां आधुनिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इन बच्चों को के.जी से लेकर पी.जी. तक की पारंपरिक शिक्षा देने के साथ उन्हें वाहन चालन, फल संरक्षण, टेलरिंग, बुनाई, बेकरी, कन्फेक्शनरी, नर्सिंग, मेडिकल लैब टेक्नीशियन आदि का पेशेवर प्रशिक्षण भी दिया जाता है, जिससे कि पढ़ाई पूरी करने के बाद वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इसके साथ-साथ उन्हें शरीर सौष्ठव तथा नृत्य, संगीत आदि की भी शिक्षा दी जाती है। 'कीट' व 'कीस' के छात्रों को प्रेरित करने के लिए परिसर में विश्व के महत्वपूर्ण व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाता है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व-उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत, उपराष्ट्रपति मोहम्मद हामिद अंसारी, प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह, भारत में अमेरिकी राजदूत टिमोथी जे रोमर, योगगुरु बाबा रामदेव, नोबेल पुरस्कार से सम्मानित डॉ रिचर्ड आर अर्नेस्ट, प्रो. रोल्फ एम जिन्करजगेल, नोबेल विजेता प्रो. हैंस हेन्गार्टनेर, डॉ वर्गीज कूरियन, डॉ मैक्सीन ओल्सन, प्रो. सुखदेव थोराट, न्यायमूर्ति अल्तमस कबीर, श्री अर्जुन सिंह, ओडिशा के राज्यपाल श्री मुरलीधर चंद्रकांत भंडारे, मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक, पूर्व केन्द्रीय मंत्री राम जेठमलानी, पूर्व चुनाव आयुक्त नवीन चावला, चुनाव आयुक्त एस. वाई. कुरैशी व तमाम अन्य गण्यमान्य लोगों ने इस परिसर में पधार कर छात्रों को अनुप्रेरित किया है। यह डॉ सामंत तथा उनके फैकल्टी की मेहनत का परिणाम है कि कीस के वे आदिवासी बच्चे, जिन्होंने कभी 'रग्बी' का खेल तक नहीं देखा था, मात्र छह महीने के प्रशिक्षण के बाद लंदन में सन २००७ में आयोजित अंडर-१४ रग्बी टूर्नामेंट में विश्व विजेता बन जाते हैं। सन २००८ में आस्ट्रेलिया में वे छह इंटरनेशनल टीमों पर जीत हासिल करते हैं। उनका चयन रग्बी तथा नेटबाल खेलों के वर्ग में राष्ट्रमंडल के खेलों में भाग लेने के लिए भी किया गया था।

सम्मानित व्यक्तित्व

समाज के प्रति डॉ अच्युत सामंत की सेवा साधना को देखते हुए विभिन्न सामाजिक संगठनों ने समय-समय पर डॉ सामंत को सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित किया है। एक नेशनल टीवी चैनल ने डॉ सामंत को वर्ष २००७ का 'प्रिय ओडिशा सम्मान-२००७' से नवाजा। साउथ अफ्रीका के जोहान्सबर्ग की संस्था 'महात्मा गांधी रिमेम्बरेन्स आर्गेनाइजेशन' ने इन्हें वर्ष २००४ में 'ह्युमेनिटेरियन अवार्ड-२००४' से नवाजा था। नयी दिल्ली में इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ एनआरआई ने डॉ सामंत को 'हिंद रत्न अवार्ड-२००७' नवाजा था। लंदन की संस्था 'इंडियन इंटरनेशनल फ्रेंडशिप सोसाइटी' ने इन्हें 'ग्लोरी ऑफ इंडिया अवार्ड-२००७' से नवाजा था। वहीं कोलंबो की ओ.आई.यूनिवर्सिटी ने वर्ष २००२ में इन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि तथा वर्ष २००५ में डॉक्टर ऑफ साइंस की उपाधि से सम्मानित किया था। सामाजिक उद्यमिता के क्षेत्र में योगदान के लिए वैज्ञानिक डॉ राजा रमन्ना के हाथों डॉ सामंत को वर्ष २००२ में 'नंदीघोष अवार्ड-२००२' से भी सम्मानित किया गया था। ओडिशा के तत्कालीन राज्यपाल ने वर्ष २००२ में इन्हें 'प्राणनाथ अवार्ड-२००२' से नवाजा था।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए पी जे अब्दुल कलाम के साथ डॉ. अच्युत सामंत

अनुपम व अनुकरणीय

छोटे कद के विराट व्यक्तित्व वाले डॉ अच्युत सामंत 'कीस' के विद्यार्थियों के बीच उन्हीं बालकों की तरह सहज व्यवहार करते हुए उन्हें कभी मित्रवत तो कभी पितृवत सीख देते हैं। समाज के सजग प्रहरी की भांति वे विपदा की घड़ी में प्रभावितों के बीच यथासंभव मदद को पहुंचते हैं। चाहे प्राकृतिक आपदा से प्रभावित होने वाले ओडिशा के वासी हों, अथवा किसी अन्य राज्य के। डॉ सामंत विपदाग्रस्तों के बीच सीमा का भेदभाव नहीं बरतते हैं। डॉ सामंत ओडिशा के गरीब आदिवासी लोगों के बीच शैक्षणिक क्रांति लाना चाहते हैं तथा इसके लिए ओडिशा के प्रत्येक जिले (३०) में कीस की ही भांति एक नि:शुल्क आवासीय विद्यालय तथा एक इंटरनेशनल स्कूल खोलने की इनकी योजना है तथा वे इस दिशा में कार्यरत हैं। अधिकतर जिला मुख्यालयों में भूमि अधिग्रहण का कार्य संपन्न हो चुका है तथा तमाम स्थानों पर दोनों प्रकार के स्कूलों के निर्माण का कार्य युद्धस्तर पर चलाया जा रहा है।

समाजहित में अविवाहित रहकर दीन-हीन आदिवासी बालकों तथा छात्रों को पितृवत स्नेह देने वाले, अनुपम व्यक्तित्व के डॉ अच्युत सामंत समाज के लिए अनुकरणीय हैं। हम सब इनके प्रति श्रद्धावनत हैं।

'विदेह डॉक्टर अच्युत सामंत

अनुपम व अनुकरणीय'

'रहिमन जे कछु कर सके / करिये ताकी आस / रीते सरवर कौन तके / मिटत नहीं प्यास।' अरसा पहले ही घोर अभाव से जूझते ओडिशा के कटक के कलरबंका गांव में सन् १९६५ में जन्मे और चार वर्ष में ही पितृहीन हुए उस बालक ने जीवन की कठोर वास्तविकता को समझ लिया था और ठान ली थी कि किसी भी प्रकार से, कठोरतम श्रम कर अपनी इस असह्य परिस्थिति को हर हाल में बदलना है। वह बखूबी अपनी मां की उन तमाम दिक्कतों को समझ पा रहा था, जिसे वे झेल रही थीं। परिवार वैसे ही इतना अभावग्रस्त था कि उस बालक की जन्मतिथि तक किसी को याद रखने की आवश्यकता नहीं थी। बालपन में ही अपने पिता स्वर्गीय अनादि चरण सामंत को खो चुके इस बालक की माँ श्रीमती नीलिमा रानी सामंत के पास अपने बच्चों को दुलारने तक का समय नहीं था।